International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(4): 104-105

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(4): 104-105
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 20-04-2015
Accepted: 25-05-2015

वन्दना देवी
शोध कर्त्री संस्कृत विभाग हि० प्र० विश्वविद्यालय शिमला–5

Correspondence
वन्दना देवी
शोध कर्त्री संस्कृत विभाग हि० प्र० विश्वविद्यालय शिमला–5

सतीविजयः में सामाजिक स्थिति

वन्दना देवी

'सतीविजयः' कवि जयनारायण यात्री द्वारा विरचित महाकाव्य है। इसकी कथावस्तु का मूल स्त्रोत कालिदास का महाकाव्य 'रघुवंषम्' है। प्रस्तुत महाकाव्य का सम्पूर्ण कथानक आठ परिच्छेदों में विभाजित है।

भारतवर्ष की भूमि उर्वरा, प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर और धन–धान्य से परिपूर्ण थी। ऐसी पुण्य भूमि पर वेद–विहित धर्म का आचरण करती हुई आर्य–सन्तति निवास करती थी। वह सभी क्षेत्रों में उत्तरोत्तर उन्नति और विकास कर रही थी। सम्पूर्ण समाज गुण और कर्म के आधार पर चार वर्णों– 1. ब्राह्मण, 2. क्षत्रिय, 3. वैष्य 4. शूद्र में विभाजित था।

'सम्' उपसर्गपूर्वक 'अज्' धातु से समाज शब्द की निष्पत्ति होती है, जिसका अर्थ है, मनुष्यों का समुदाय। मानवेतर प्राणियों के समुदाय को समाज कहा गया है। समाज में जिस तरह के संस्कारों तथा सामाजिक सम्बन्धों का ताना–बाना होता है वही संस्कृति कहलाती है और वही उस समाज की पहचान होती है।

समाज एक निरन्तर विकासशील और परिवर्तनशील व्यवस्था है। इसमें सदा के लिए स्थायित्व बना नहीं रह सकता। देश तथा काल के अनुसार मनुष्य बदलते रहते हैं। यही भारत के सन्दर्भ में भी सत्य है। भारत का सामाजिक परिवेश वैदिक युग से लेकर आज तक निरन्तर गतिशील है। इस प्रकार 'सतीविजयः' महाकाव्य में प्रतिबिम्बित सामाजिक स्थिति इस प्रकार से है –

वर्ण व्यवस्था

वर्ण–व्यवस्था का प्रादुर्भाव भारत में आज से हजारों वर्ष पहले हुआ था। 'वर्ण' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्रयुक्त हुआ है।[1] यास्क ने वर्ण शब्द की सिद्धि 'वर्णो वृणोतेः' कहकर 'वृञ्' धातु से 'जो अपने आश्रित को ढक लेता है, अर्थ में की है।[2] ऋग्वेदकालीन समाज में वर्ण–व्यवस्था गुण एवं कर्म पर आधारित था।[3] रामायण[4] तथा मनुस्मृति[5] में भी चातुर्वर्ण्य के कर्त्तव्य का उल्लेख है। कवि ने 'सतीविजयः' में वर्ण व्यवस्था का इस प्रकार वर्णन किया है :

ब्राह्मण

वर्णों में ब्राह्मण–वर्ण सर्वोच्च माना जाता था। शास्त्रों में चारों वर्णों के पृथक्–पृथक् धर्म तथा कर्म बतलाए गए हैं। ब्राह्मण के लिए अध्ययन अध्यापन, यजन–याजन, दान और प्रतिग्रह सम्बन्धी कार्य निर्धारित किए गए।[6] ऋग्वेद के अनुसार ब्राह्मण पुरुष का मुख है।[7] 'सतीविजयः' महाकाव्य में रावण ने ब्राह्मण होते हुए शराब तथा माँस के सेवन से अपने ब्राह्मणत्व को दूषित कर दिया था। इससे स्पष्ट होता है कि ब्राह्मण का मांस खाना तथा शराब पीना उचित नहीं माना जाता था।[8] रावण द्वारा बाएँ कन्धे पर जनेऊ धारण करने वाले ब्रह्मा का वर्णन मिलता है।[9] अयोध्या में सत्य वक्ता सदाचारी ब्राह्मण रहते थे।[10] इन्दुमती को ब्राह्मणपूजक कहा गया है।[11] उस समय ब्राह्मण पौरोहित्य कर्म करते थे तथा ज्योतिष–विद्या में निष्णात होते थे।[12]

राजपुरोहित कर्मकाण्ड में निपुण होते थे।[13] कार्य समापन पर उन्हें सादर दान भी दिया जाता था।[14] काव्य में ब्राह्मण ने राजा के पुत्र का नामकरण भी किया था।[15] उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि ब्राह्मण ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड में पारंगत होते थे।[16] यौवराज्याभिषेक के अवसर पर पुरोहित द्वारा नवग्रहों की पूजा तथा यज्ञादि करवाने का वर्णन है।[17]

क्षत्रिय

ब्राह्मणों के अनन्तर वर्ण – व्यवस्था में द्वितीय स्थान क्षत्रियों का है। शारीरिक दृष्टि से सबल होना क्षत्रियों का गुण था। 'ऋग्वेद' में क्षत्रिय शब्द का अनेकधा उल्लेख है वे शूरवीर होते थे।[18] 'सतीविजयः' के अनुसार क्षत्रिय का व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक होता था। मक्खन–सा कोमल

होते हुए भी वह युद्ध में लोहे सा मजबूत, घुटनों तक भुजाओं वाला, चौड़ी छाती वाला तथा सभी शस्त्रों के प्रयोग तथा धनुर्विद्या में निपुण होता था।[19] वे तेजस्वी, वीर तथा परोपकारी होते थे। क्षत्रिय होने पर राजा दशरथ परदुःखहारक तथा प्रजा रक्षण हेतु शत्रुओं के संहारक थे।[20] क्षत्रिय में एक अलौकिक एवम् असह्य तेज होता था।[21]

क्षत्रिय साहसी होते थे। वे कठिन परिस्थितियों में भयग्रस्त नहीं होते थे। 'सतीविजयः' महाकाव्य में कोसलेश ने धैर्य और साहस का परिचय देते हुए त्रिलोकजयी रावण के सम्मुख पराजय तथा अपमान की अपेक्षा लड़कर मरना अच्छा माना था।[22] अपने आप को रावण से कम न मानते हुए दशरथ अपनी विशाल सेना लेकर युद्ध के लिए चला।[23] रावण की जीत को देखकर दशरथ ने दूत से अपने हार जाने का वर्णन किया है। लेकिन क्षत्रिय कुलज होने से वे युद्ध से विमुख नहीं हो रहे हैं।[24] 'सतीविजयः' महाकाव्य में राजा अज को सर्वशास्त्रज्ञ धनुर्विद्या में निपुण, वीरों में श्रेष्ठ तथा दानी कहा है।[25] क्षत्रिय का कर्त्तव्य प्रजा की रक्षा करना था। क्षत्रिय दानी होते थे तथा धार्मिक कार्य की पूर्ति पर बिना माँगे कर्मकाण्डी ब्राह्मणों को प्रभूत धन देते थे। राजा अज ने पुत्र प्राप्ति पर दीन, दुःखी तथा भिखारियों को दान दिया था।[26]

वैश्य

समाज में वैश्य तृतीय वर्ण का बोधक है। 'ऋग्वेद' में वैश्य के लिए 'विश्' धातु का प्रयोग है। वैश्य का कार्य सामान्यतः कृषि, पशुपालन, वाणिज्य, दान, यज्ञ एवं वेदाध्ययन था।[27] 'सतीविजयः' में भारत देश में बाज़ार मणियों की आभा से युक्त तथा हाट–बाज़ार सुवर्ण–रजत के ढ़ेरों से सनाथ थे।[28] इससे स्पष्ट होता है कि कवि ने वैश्य वर्ण का उल्लेख नामतः नहीं किया है।

खेतों, किसानों, गौओं एवं बाज़ारों का कई स्थलों पर वर्णन किया है।[29] युद्ध के अवसर पर अनेक शस्त्रों के प्रयोग से उनको बनाने वाले कारीगरों के एक वर्ग का सहज ही अनुमान होता है।[30] जिससे इनका व्यापार करने वाले वैश्य वर्ग का ज्ञान स्पष्टतः अनुमेय है।

शूद्र

शूद्र को वर्णन व्यवस्था के अन्तर्गत अन्तिम स्थान पर रखा गया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों को आर्य तथा शूद्र को हीन वृत्ति के कारण पृथक् रखा गया था।[31] 'ऋग्वेद' में केवल एक बार शूद्र का उल्लेख आया है, जहाँ इसकी उत्पत्ति पुरुष के पैरों से बताई गई है।[32] 'रामायण' के अनुसार सामाजिक सेवा करना शूद्रों का प्रथम कर्त्तव्य था।[33] कविजयनारायण यात्री के 'सतीविजयः' में शूद्रों की स्थिति का विशेष विवरण उपलब्ध नहीं होता है तथापि विभिन्न वर्णों के उल्लेख से समाज में शूद्रों की विद्यमानता का अनुमान भी होता है। जिस प्रकार ब्राह्मण और क्षत्रिय अपने नियमों का आचरण किया करते थे, उसी प्रकार शूद्र भी अपने निर्धारित नियमों का पालन अवश्य करते रहे होंगे।

'सतीविजयः' में अनेक स्थलों पर दासियों का वर्णन किया गया है। इसी से स्पष्ट होता है तत्कालीन समाज में भी शूद्र रहे होंगे और उनका प्रमुख कर्त्तव्य अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना रहा होगा। इस प्रकार तत्कालीन भारतीय समाज में सब लोग अपने वर्ण–धर्म के अनुसार कार्य किया करते थे। अतएव भारतीय समाज सब प्रकार से खुषहाल था।

सम्प्रति उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि भारत में सब प्रकार से आदर्ष, श्रेष्ठ वैदिक सामाजिक–व्यवस्था थी।

सन्दर्भः

1. ऋग्वेद : 2.12.4,1.179.6
2. निरुक्त : 2/पृष्ठ 71
3. ऋग्वेद : 10.90.12
4. वाल्मीकि रामायण : 1.6.17
5. मनुस्मृति : 1.89
6. वही : 1.90
7. ऋग्वेद : 10.90.12
8. सतीविजय : 1/पृष्ठ 3
9. वही : 1/पृष्ठ 10
10. वही : 2/पृष्ठ 20
11. वही : 2/ पृष्ठ 27
12. वही : 2/पृष्ठ 48
13. वही : 3/ पृष्ठ 49
14. वही : 3/ पृष्ठ 52
15. वही : 6/पृष्ठ 53–54
16. वही : 6/पृष्ठ 154–155
17. ऋग्वेद : 1.57.2, 8.35.16–17
18. सतीविजय : 2/पृष्ठ 22
19. वही : 6/पृष्ठ 150, 157
20. वही : 7/ पृष्ठ 160
21. वही : 7/ पृष्ठ 172
22. वही : 8/ पृष्ठ 194
23. वही : 8/पृष्ठ 196
24. वही : 3/पृष्ठ 23
25. वही : 3/पृष्ठ 52
26. वही : 3/पृष्ठ 52
27. वैदिक साहित्य का इतिहास : पृष्ठ 70
28. सतीविजय : 1/पृष्ठ 5
29. वही : 2/पृष्ठ 19–20
30. वहीः 5/पृष्ठ 104
31. वही : 8/पृष्ठ 192, 194
32. अथर्ववेद : 4.20.4
33. ऋग्वेद : 10.90.12
34. वाल्मीकि रामायण : 7.74.21